



## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

### विषय

भारत के कूटनीतिक श्वेत क्षेत्रः  
छोटे मंच, बड़े प्रतिफल

## भारत के कूटनीतिक श्वेत क्षेत्र: छोटे मंच, बड़े प्रतिफल

### संदर्भ

- 26 जनवरी 2026 को भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में यूरोपीय संघ के संस्थागत नेतृत्व की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति—जो किसी एक राष्ट्रीय राजधानी के बजाय 27 सदस्यीय समूह का प्रतिनिधित्व करती है—एक महत्वपूर्ण संकेत है।
- यह खंडित विश्व में भारत के कूटनीतिक फोकस में द्विपक्षीय संबंधों से आगे बढ़कर गठबंधन-आधारित सहभागिता की ओर परिवर्तन को रेखांकित करता है।

### अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में 'श्वेत क्षेत्र' (White Spaces) क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- 'श्वेत क्षेत्र' वैश्विक शासन के वे क्षेत्र हैं जहाँ समस्याएँ अत्यंत तात्कालिक हैं, सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है, किंतु कोई भी प्रमुख शक्ति या संस्था विश्वसनीय रूप से नेतृत्व करने की स्थिति में नहीं है।
- इन क्षेत्रों में अनेक हितधारक, उनके अलग-अलग हित और जोखिम तो होते हैं, पर समाधान के समन्वय हेतु कोई प्रभावी संयोजक (convenor) नहीं होता।
- उदाहरणस्वरूप—उभरती प्रौद्योगिकियों का शासन, आपूर्ति-शृंखला की लचीलापन क्षमता, जलवायु अनुकूलन वित्त, महामारी तैयारी, तथा छोटे देशों के लिए समुद्री सुरक्षा।
  - लगभग सभी देश और संस्थान इस बात पर सहमत हैं कि कुछ किया जाना चाहिए, पर कोई भी समाधान को प्रभावी रूप से लागू करने में सक्षम नहीं है।

### केंद्रीकृत नेतृत्व का क्षरण

- संयुक्त राष्ट्र वैधता और मानदंड प्रदान करता है, किंतु जब प्रमुख शक्तियों में असहमति होती है तो कार्यान्वयन में कठिनाई आती है।
- जी-20 पर घरेलू राजनीति और एजेंडा विवादों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।
- विशेषकर अमेरिका और चीन के बीच महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता किसी एक अभिनेता की निर्विरोध नेतृत्व क्षमता को सीमित करती है।
  - परिणामस्वरूप, अनेक वैश्विक चुनौतियाँ शासन-रिक्तियों में फँस जाती हैं—जो तकनीकी निकायों के लिए अत्यधिक राजनीतिक और राजनीतिक मंचों के लिए अत्यधिक तकनीकी होती हैं।

### भारत के कूटनीतिक 'श्वेत क्षेत्र'

- भारत के लिए सबसे बड़े अवसर वैश्विक कूटनीति के 'श्वेत क्षेत्रों' में निहित हैं—ऐसे क्षेत्र जहाँ कोई प्रमुख शक्ति नेतृत्व नहीं कर रही, किंतु समन्वय अत्यंत आवश्यक है।
- इन मंचों पर भारत, यदि वह सतत प्राथमिकताओं का चयन करे, तो नियम-निर्माण और वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के लिए गठबंधन बनाकर परिणामों को आकार दे सकता है।
- भारत और यूरोप:** भारत के गणतंत्र दिवस पर यूरोपीय संघ के संस्थागत नेतृत्व की भागीदारी, लंबे समय से लंबित भारत-ईयू मुक्त व्यापार समझौते (FTA) की दिशा में गति को रेखांकित करती है, जिसमें डेटा शासन, सततता मानक और बाजार पहुँच के नियम शामिल हैं।

- यदि इसे रणनीतिक रूप से एक 'डी-रिस्किंग कॉम्पैक्ट' के रूप में अपनाया जाए, तो भारत-ईयू एफटीए भारत को निम्नलिखित लाभ प्रदान कर सकता है:
  - यूरोपीय बाजारों तक पहुँच;
  - पुनर्गठित वैश्विक मूल्य शृंखलाओं में सुदृढ़ स्थिति;
  - अमेरिकी व्यापार अस्थिरता के विरुद्ध सुरक्षा।
- यूरोपीय संघ की उत्सुकता का कारण चीन पर निर्भरता कम करने और अमेरिका की अनिश्चितता से बचाव करने की उसकी रणनीति है।

### भारत की 'श्वेत क्षेत्र' कूटनीति से जुड़ी चिंताएँ और मुद्दे

- अत्यधिक गठबंधनों का संतुलन:** 2026 में भारत की कूटनीतिक संलग्नता अत्यंत विविध है—भारत-ईयू एफटीए, ब्रिक्स की अध्यक्षता, क्वाड में नेतृत्व, तथा अमेरिका-प्रेरित नए समूहों जैसे 'पैक्स सिलिका' एवं 'बोर्ड ऑफ पीस' में भागीदारी।
  - इससे ध्यान और क्षमताओं के बिखरने का जोखिम है। स्पष्ट प्राथमिकता निर्धारण के अभाव में भारत को अनेक मंचों पर निरंतर ध्यान बनाए रखना कठिन हो सकता है।
- सुसंगत विमर्श का अभाव:** भारत की 'श्वेत क्षेत्र' कूटनीति के पास चीन की बेल्ट एंड रोड पहल या अमेरिका की इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसा कोई एकीकृत आख्यान या ढाँचा नहीं है, जो साझेदारों को इसके उद्देश्य और दिशा को स्पष्ट करे।
  - इससे गठबंधन साझेदारों के मन में भारत की दीर्घकालिक रणनीतिक उद्देश्य को लेकर अनिश्चितता उत्पन्न हो सकती है।
- आर्थिक और नियामक बाधाएँ:** प्रस्तावित भारत-ईयू एफटीए संभावनाओं से भरपूर है, किंतु इसमें उच्चस्तरीय सततता, डेटा और प्रतिस्पर्धा मानक शामिल हैं।
  - भारतीय कंपनियों, विशेषकर एमएसएमई के लिए अनुपालन महँगा और जटिल हो सकता है, जिससे घेरेलू नियामक सुधार के अभाव में प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित हो सकती है।
- व्यापारिक संवेदनशीलताएँ:** भारत का निर्यात आधार अभी भी सीमित रूप से विविधीकृत है और संरक्षणवादी प्रवृत्तियाँ बनी हुई हैं।
  - यदि भारत एफटीए को केवल एक भू-राजनीतिक सुरक्षा कवच के रूप में देखे, न कि आर्थिक आधुनिकीकरण की परियोजना के रूप में, तो यूरोप के साथ बेहतर एकीकरण के पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाएँगे।
- ब्रिक्स की खंडित सदस्यता:** विस्तारित ब्रिक्स+ में भिन्न-भिन्न राजनीतिक प्रणालियों, प्राथमिकताओं और सरेखण वाले देश शामिल हैं।
  - यह धारणा बढ़ रही है कि ब्रिक्स पश्चिम-विरोधी वक्तव्यों और डी-डॉलराइजेशन के समर्थन की ओर बढ़ रहा है।
  - इससे समूह की एकजुटता कमजोर होती है और ठोस परिणामों की दिशा में भारत के प्रयास जटिल हो जाते हैं।
- क्वाड में परिचालनात्मक अंतराल:** क्वाड की राजनीतिक दृश्यता सुदृढ़ है, पर इसकी संस्थागत संरचना सीमित है।
  - समुद्री सुरक्षा, आपूर्ति-शृंखला लचीलापन और प्रौद्योगिकी सहयोग से जुड़ी प्रतिबद्धताओं को मापनीय कार्बाई में बदलना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।
- वैश्विक मंच:** संयुक्त राष्ट्र और जी-20 जैसे बड़े बहुपक्षीय मंच दबाव में हैं।
  - संयुक्त राष्ट्र कार्यान्वयन में गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, जबकि जी-20 एंजेंडा विखंडन और राजनीतिक बहिष्कारों से प्रभावित है, तथा अमेरिकी घेरेलू राजनीति इसके वैश्विक दायरे को संकुचित कर रही है।

## भारत की संतुलनकारी भूमिका

- **ब्रिक्स:** न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) के माध्यम से विश्वसनीय विकास वित्तपोषण को सुदृढ़ करना।
  - पश्चिम-विरोधी वक्तव्यों या डी-डॉलराइजेशन अभियानों से बचना, जो निवेश और प्रौद्योगिकी प्रवाह को हतोत्साहित कर सकते हैं।
  - अस्वीकार के बजाय सुधार पर बल देते हुए, भारत को वैश्विक दक्षिण और स्थापित शक्तियों के बीच सेतु के रूप में स्थापित करना।
- **क्वाड:** यदि भारत 2026 में क्वाड शिखर सम्मेलन की मेजबानी करता है, तो लक्ष्य क्षमताओं को सेवाओं में बदलने का होना चाहिए, विशेषकर हिंद महासागर क्षेत्र में।
  - समुद्री जागरूकता और बंदरगाह लचीलापन पर क्वाड का एजेंडा उन क्षेत्रीय देशों को प्रत्यक्ष लाभ पहुँचाता है, जो प्रतिद्वंद्विताओं में संलग्न हुए बिना स्वायत्तता चाहते हैं।
  - श्रीलंका में (चक्रवात डिटवाह के बाद) भारत का 'ऑपरेशन सागर बंधु' यह दर्शाता है कि त्वरित रूप से तैनात की जा सकने वाली क्षमताएँ बिना कूटनीतिक तनाव के क्षेत्रीय आवश्यकताओं को कैसे पूरा कर सकती हैं।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उभरते गठबंधन:** फरवरी 2026 में भारत में आयोजित एआई इम्पैक्ट समिट, सरकारों, कंपनियों और शोधकर्ताओं को एक मंच पर लाकर वैश्विक प्रौद्योगिकी शासन को आकार देने का अवसर प्रदान करता है।
  - साथ ही, ट्रंप के 'बोर्ड ऑफ पीस' से लेकर एआई और सेमीकंडक्टर्स पर 'पैक्स सिलिका' गठबंधन तक, अमेरिका-प्रेरित नए समूह यह दर्शाते हैं कि नए कूटनीतिक मंच कितनी तीव्रता से उभर रहे हैं।
  - भारत को विवेकपूर्ण चयन करना होगा—वहाँ भागीदारी करनी होगी जहाँ उसके मूल्य और क्षमताएँ दीर्घकालिक प्रभाव के अनुरूप हों।

## निष्कर्ष: सही मंचों का निर्माण

- वर्ष 2026 में वैश्विक शक्ति का स्वरूप विकेंद्रीकृत है और पारंपरिक संस्थागत ढाँचे बढ़ते दबावों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में भारत की सफलता सबसे व्यापक मंचों में मात्र सहभागिता पर नहीं, बल्कि सीमित किंतु प्रभावी मंचों को कार्यसाधक बनाने पर निर्भर करेगी—जहाँ नियमों का निर्माण हो, समस्याओं के व्यावहारिक समाधान निकलें और आपसी विश्वास का सुदृढ़ीकरण हो।
- भारत की बढ़त व्यावहारिक बहुपक्षवाद में निहित है:
  - मानकों पर यूरोप के साथ साझेदारी,
  - ब्रिक्स को कार्यात्मक दिशा देना, और
  - क्वाड के माध्यम से ठोस क्षेत्रीय लाभ प्रदान करना।
- इसी प्रकार भारत कूटनीतिक 'श्वेत क्षेत्रों' को रणनीतिक अवसरों में बदल सकता है—और वैश्विक व्यवस्था को मध्य स्तर से आकार दे सकता है।

Source: TH

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न:** 'भारत के कूटनीतिक श्वेत क्षेत्र' क्या हैं? परिवर्तित होते अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में ये भारत की रणनीतिक स्वायत्तता तथा वैश्विक प्रभाव को किस प्रकार सुदृढ़ कर सकते हैं?